Vishnu Supremacy

नारायणः परं ब्रह्म् तत्त्वं नारायणः परः।
नारायण परो ज्योतिरात्मा नारायणः पूरः
तैत्तिरीय आरण्यक, प्रपाठक 10 (महा-नाराय़ण उपनिषद), अनुवाक 13 (नारायूण सूक्त), मंत्र 4
"नारायण परम ब्रह्म हैं, नारायण सर्वोच्च तत्व हैं।"

नारायण सूक्त कहता है:

यच्च किंचित् जगत् सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा। अंतर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः ॥ अनन्तं अव्ययं कविं समुद्रेन्तं विश्वशम्भुवम् ।

"संपूर्ण जगत में जो कुछ भी देखा या सुना जाता है वह सब नारायण द्वारा पूर्ण रूप से व्याप्त है, जो इसमें स्थापित है। वह अनंत, अविनाशी और सर्वज्ञ महासागर-निवासी है, जो ब्रह्मांड के लिए आनंददायक है।"

- तैत्तिरीय आरण्यक, प्रपाठक 10, अनुवाक 13, मंत्र 5-6

THE SELF BORN

In Ṛg Veda 1.156.2, Bhagavān Viṣṇu is described as "सुमत् जानये". According to Shrīman Yāskacharya ji, the word "सुमत्" means "स्वयम"

Nirukta vedāṅga 6.22

व्युदस्येति । एधमानानहर्द्वेष्ट्यसुन्वतः । सुन्वतोऽभ्यादधाति । उभयस्य राजा । दिव्यस्य च पार्थिवस्य च । चोष्कूयमाण इति चोष्कूयतेश्चर्करीतवृत्तम् ।

सुमत्स्वयमित्यर्थः ।

सुमत् का अर्थ स्वयम है।

janya [Printed book page 0338-b]

Janya, as, ā, am, to be born or produced, producible; born, produced; (often at the end of a comp.) born from, arising or produced from, occasioned by; generating; (*as*), m. a father; (*am*), n. the body; a portent occurring at birth; (*as, ā, am*),

The meaning of the word janya is also related to creation (born,produce,birth). Hence, we can conclude that the mantra is telling Bhagavān Viṣṇu to be self born.

Some commentaries in support of the interpretation

यः योमर्त्यः पूर्व्यायपूर्वकाळीनायनित्यायेत्यर्थः वेधसेविविधजगत्कर्त्रे नवीयसेनित्यनूत-
नायं अत्यन्तरमणीयायेत्यर्थः स्तुत्यायवा सुमज्जानये स्वयमेवोत्पन्नाय जनेरौणादिकइण् सुम-
त्स्वयमित्यर्थेइतियास्कः । यद्वा सुवरांमादयवीतिसुमव् तादृशीजायायस्यसतथोक्तः तस्मै सर्व-
जगन्मादनशीलश्रीपतयइत्यर्थः बहुव्रीहौजायायानिङितिनिङादेशःसमासान्तः वलिलोपःउक्त-
गुणकायविष्णवे व्यापकायददाशति हविरादिकंददाति किंच अस्य विष्णोर्महतोमहानुभावस्य
महि महद् पूज्यंजातंजन्म उत्पत्तिं हिरण्यगर्भादिरूपंजन्म ब्रवद् ब्रूयाद् ब्रवीतेर्लेटचडागमः

~SāyaṇaBhāṣya

"He who presents (offerings) to Viṣṇu, the ancient, the creator, the recent, the self-born; he who celebrates the great birth of that mighty one; he verily possessed of abundance, attains (the station) that is to be sought (by all)."

~HH wilson

२. जो व्यक्ति प्राचीन मेधावी, नित्य नवीन और स्वयं उत्पन्न या जगन्मादनशीला स्त्रीवाले विष्णु को हव्य प्रदान करता है; जो महानुभाव विष्णु की पूजनीय आदि कथा कहते हैं; वे ही समीप स्थान पाते हैं।

~Ramgovind trivedi

जो लोग नित्य, जगत्कर्त्ता, नवीनतम तथा स्वयं उत्पन्न विष्णु को हव्य देते हैं एवं जो इस महापुरुष के पूज्य जन्म वृत्तांत को कहते है, वे ही इनका सामीप्य पाते हैं. (२)

~Dr Ganga Sahay Sharma

Rigved 7.40.5
asya devasya mILhuSo vayA viShNoreShasya prabhR^ithe havirbhiH |
vide hi rudro rudriyaM mahitvaM yAsiSTaM vartirashvinAvirAvat.h || (Rig Veda 7:40:5)
Rudra Deva gained his Rudra padavi by worshiping viSNu.
Now it's clear that Lord Shiva is a position acquired by any jeevatma.
Many might question the translation and vyakaran so let's see the word by word Translation.
Asya devasya viShNoH (Of this deva, Vishnu) -- All in shaShThivibhakti.
mILhuShaH -- from the dhatu 'mih' which means 'to bestow', 'vayA=' from the root 'vaya' means bandhana, the word 'vayA' meaning 'bandhaka' (one who causes us to be bound), 'prabhR^ite havirbhiH' (by devoted offerings in the sacrifice), vide = lebhe (obtained) hi = indeed, rudro = rudra, rudriyaM mahatvaM = the glory associated with rudra. (this verse proceeds to link the above in reference to Ashvini devataas). Thus, By offerings with extreme devotion (pra-bhR^ithe) to this deva, viShNu, who is very bestowful, rudra obtained the glory th

ऋग्वेद 7.40.5

अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः । विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ॥

अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः । विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ॥(ऋग्वेद 7:40:5)

रुद्र देव ने विष्णु की पूजा करके अपनी रुद्र पदवी प्राप्त की।

अब यह स्पष्ट है कि भगवान शिव किसी जीवात्मा द्वारा प्राप्त पद हैं।

कई लोग अनुवाद और व्याकरण पर सवाल उठा सकते हैं तो आइए शब्द दर शब्द अनुवाद देखें।

अस्य देवस्य विष्णोः (इस देव, विष्णु के) - सभी षष्ठीविभक्ति में।. मिलहुषाः – 'मिः' धातु से जिसका अर्थ है 'प्रदान करना', 'वयः' धातु 'वय्' से जिसका अर्थ है बंधन, 'वय' शब्द का अर्थ है 'बंधक' (जो हमें बांधता है), 'प्रभ्र ^इते हविर्भिः (यज्ञ में समर्पित आहुति द्वारा), विदे = लेभे (प्राप्त) हि = वास्तव में, रुद्रो = रुद्र, रुद्रियाम महत्वाम = रुद्र से संबंधित महिमा। (यह श्लोक अश्विनी देवताओं के संदर्भ में उपरोक्त को जोड़ता है) इस प्रकार, अत्यंत भक्ति (प्रभृ^ते) के साथ इस देव, विष्णु, जो बहुत दानशील हैं, को अर्पण करके, रुद्र ने वह महिमा प्राप्त की।

ऐतरेय ब्राह्मण 1.1.1 -

अग्निरवै देवानामवमो विष्णुः परमः तदन्तर सर्व देवताः

"अग्नि सबसे निचले स्थान पर हैं और विष्णु देवों में सबसे ऊंचे हैं। अन्य सभी देवता बीच के स्थानों पर हैं।

सोऽपि स्वयम्भुर्भगवान्सिसुरविविधः प्रजाः । आप एव ससर्जादौ तासु वीर्यमवसृजत् 10 आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूणवः । अयनं तस्य तः पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः 11 सप्त बह्मना इत्येते पुराणे निश्चयं गतः । ततोऽसृजत्पुनर्ब्रह्मा रुद्रांक्रोधसमुद्भवन् 17

7. हे श्रेष्ठ मुनि! उस स्वयंभू को नमस्कार है जिससे कल्प तथा सभी प्राणी उत्पन्न होते हैं।

10. भगवान स्वयं उत्पन्न हुए और उन्होंने नाना प्रकार की प्रजाओं की रचना करने की इच्छा से पहले जल की रचना की, फिर उनमें पुरुषत्व का संचार किया।

11. जल को नर (नर से संबंधित) कहा जाता है। जल नर की संतान हैं। चूँकि जल उनका निवास स्थान था, इसलिए उन्हें नारायण कहा जाता है।

17. पुराणों में इन्हें सात ब्रह्मा कहा गया है। ब्रह्मा ने क्रोध से उत्पन्न होकर पुनः रुद्रों की रचना की। (शिव पुराणों उमा संहिता अध्याय 29)↓

(स च वैराजपुरुषः स्वसृष्टास्वपस्वशेत यत्। तेन नारायण इति प्रोच्यते निगमादिभिः ॥ 12 ॥ • तन्नाभिपद्मद्ब्रह्मसीद्रजसोऽथ हृदम्बुजात्। जज्ञे विष्णुः सत्त्वगुणो ललतात्तमसो हरः ॥ 13 ॥

12. वह वैराज - पुरुष अपने द्वारा बनाए गए जल पर सोया था। इसलिए वेदा और अन्य ग्रंथों में उसे नारायण कहा गया है।

13. उनकी नाभि के कमल से रजोगुण से युक्त ब्रह्मा उत्पन्न हुए। उनके हृदय कमल से सत्वगुण से युक्त विष्णु उत्पन्न हुए। उनके ललाट से तामस गुण से युक्त हर उत्पन्न हुए। हरि का मतलब विष्णु हर का मतलब शिव (स्कंद पुराण वैष्णव खंड. वासुदेव-माहात्म्य. अध्याय.24)↓

नारायणाय देवाय नारायणाय च। नारायणस्वरूपाय नारायणत्नुद्भव ॥

शिव को नमस्कार, जो भगवान नारायण के समान हैं, नारायण के प्रति समर्पित हैं, नारायण का एक रूप हैं और नारायण के शरीर से पैदा हुए हैं।

(शिव पुराण रुद्र-संहिता ,युद्ध-खंड ,अध्याय 2. श्लोक .24)➙

@vaishnav_supremacy

(कन्या त्वेयम्बोधे माता मम शिवस्य च देवानामथ सर्वेषां लोकानामस्ति निश्चितम् ॥ नारायणं वासुदेवं परं ब्रह्माखिलेश्वरम्। पुरूषोत्तममेवैकं विनाशस्य नापरः पतिः ॥ (स्कंद पुराण वैष्णव खंड. वासुदेव-माहात्म्य. अध्याय.14. श्लोक .33) - (ब्रह्मा ने कहा) हे जल के भण्डार ! यह आपकी पुत्री (लक्ष्मी) मेरी भी और शिव की भी माता है। यह निश्चित है कि वह सभी देवताओं और लोकों की माता है। नारायण, वासुदेव, परम ब्रह्म, सभी के भगवान, उत्कृष्ट पुरुष के अलावा उसका कोई अन्य पति नहीं है।)↓

(पुरुषस्त्वं जगन्नाथो विष्णुर्विश्वेश्वरो भवान् । त्वत्क्रोधसम्भवो रुद्रस्तमसा च समावृतः । त्वत्प्रसादाज्जगद्धाता रजसा च पितामहः ॥ ७ त्वत्प्रसादात्स्वयं विष्णुः सत्त्वेन पुरुषोत्तमः। कालमूर्ते हरे विष्णो नारायण जगन्मय ॥ ८

आप ही भगवान विष्णु लक्ष्मीकांत में शंख चक्र का आधार है करने वाले तमोगुणसे संलिप्त भगवान् रुद्र आपके क्रोधसे आविर्भूत हैं तथा आपके ही अनुग्रहसे रजोगुणसे सम्पन्न जगत्के सृजनकर्ता पितामह ब्रह्माकी उत्पत्ति हुई है। हे कालमूर्ते ! हे हरे ! हे विष्णो ! हे नारायण ! हे जगन्मय ! सत्त्वगुणयुक्त साक्षात् पुरुषोत्तम विष्णु भी आपके ही अनुग्रहसे अधिष्ठित हैं ॥ ७-८ ॥ (लिंग पुराण पहला भाग अध्याय 36)↓

कः सृष्टा कश्च ते गोप्ता केन नाम्नाभिधीयते | ब्रह्मोवाच | ईश्वरः प्रोच्यते लोके विष्णुश्चानतशक्तिधृत तत्सकाशत्तु जातं मम् स्रष्टारामवगच्छतम् |31ते रुदन्तो द्रवान्तश्च गतवन्तः पितामहम् | रोदानाद्रवनाच्चैव रुद्र एवेति ते स्मृतः ||82 दक्षश्चैव महाबाहुः पुष्करस्तम एव च | चाक्षुषश्च ततोतृश्च तथा भद्रमहोरागौ ||93विश्वान्तक वसुरबालो निकुन्भाश्च महयषाः |रुरूदश्चतिसिद्धौजा भास्कर प्रमितद्युतिः 94

३०ब-३ला. ब्रह्मा ने कहा: "वे भगवान विष्णु कहलाते हैं, जिनमें अनंत शक्ति है। मुझे उनसे उत्पन्न सृष्टिकर्ता जानो।"

82. वे रोते हुए और दौड़ते हुए अपने पितामह के पास गए। रोने और दौड़ने के कारण वे रुद्र कहलाए ।

93-94. महाबाहु दक्ष, पुष्कर और तम , तत्पश्चात चाक्षुष , चित्र , भद्र और महोराग , विश्वन्तकवसु, महान यशस्वी बाल निकुंभ , पुत्र से भी अधिक तेजस्वी रुद्र और अतिसिद्धौजा उत्पन्न हुए। (पद्म पुराण सृष्टिखण्ड अध्याय 40)➙

@vaishnav_supremacy

आदिसर्गे महाविष्णुः स्वप्रकाशो जगन्मयः । गुणभेदमधिष्ठाय मूर्त्तित्रिकमवासृजत्।। ३-३।। "प्रारंभिक सृजन में, महान विष्णु, जो स्वयं प्रकाशवान और सम्पूर्ण जगत के आधार हैं, ने गुणों के भेद को नियंत्रित करते हुए तीन मूर्तियों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को सृजित किया।" सृष्ट्यर्थं तु पुरा देवो दक्षिणाङ्गात्प्रजापतिम् । मध्येरुद्राख्यमीथानं जगदन्तकरं मुने ।। ३-४।। "सृष्टि के उद्देश्य से, पहले भगवान ने दक्षिण अंग से प्रजापति (ब्रह्मा) को उत्पन्न किया और मध्य में उग्र (रुद्र) को प्रकट किया, जो संसार के अंत को लाने वाला है, हे मुनि।" (नारद पुराणम् पूर्वार्ध अध्याय 3. (३.हिंदी प्रथम पाठ) संस्कृत एडिशन)↓

प्रविश्यान्तर्महातेजाः स्वयमेवात्मसम्भवः । प्रभावादपि तद्व्याप्त्या विष्णुत्वमगमत् पुनः ॥ ३०तदन्तर्भगवानेष सूर्यः समभवत् पुरा। आदित्यश्चादिभूतत्वाद् ब्रह्मा ब्रह्म पठन्नभूत् ॥ ३१
सर्वत्र व्याप्त होनेके कारण वे पुनः विष्णुभावको प्राप्त हो गये। तदनन्तर उस अण्डेके भीतर सर्वप्रथम ये भगवान् सूर्य उत्पन्न हुए, जो आदिसे प्रकट होनेके कारण 'आदित्य' और वेदोंका पाठ करनेसे 'ब्रह्मा' नामसे विख्यात हुए। (मत्स्यपुराण अध्याय 2)↓

दत्ता भद्राय धर्माय ब्रह्मणा दृष्टकर्मणा। या तु रूपवती पत्नी ब्रह्मणः कामरूपिणी ॥ ३४ सुरभिः सा हिता भूत्वा ब्रह्माणं समुपस्थिता । ।। ततस्तामगमद् ब्रह्मा मैथुनं लोकपूजितः ॥ ३५ लोकसर्जनहेतुज्ञो गवामर्थाय सत्तमः । जज्ञिरे च सुतास्तस्या विपुला धूमसन्निभाः ॥ ३६ नक्तसंध्याभ्रसङ्काशा प्रादहंस्तिग्मतेजसः । ते रुदन्तो द्रवन्तश्च गर्हयन्तः पितामहम् ॥ ३७ रोदनाद् द्रवणाच्चैव रुद्रा इति ततः स्मृताः । निर्ऋतिश्चैव शम्भुर्वे तृतीयश्चापराजितः ॥ ३८ मृगव्याधः कपर्दी च दहनोऽथेश्वरश्च वै। अहिर्बुध्न्यश्च भगवान् कपाली चापि पिङ्गलः ॥ ३९ सेनानीश्च महातेजा रुद्रास्त्वेकादश स्मृताः ।
इसी बीच ब्रह्माकी स्वेच्छानुसार रूप धारण करनेवाली एवं हितकारिणी सुन्दरी पत्नी सुरभिका रूप धारण कर ब्रह्माके निकट उपस्थित हुई। तब लोक-सृष्टिके कारणोंके ज्ञाता लोकपूजित देवश्रेष्ठ ब्रह्माने गौओंकी उत्पत्तिके निमित्त उसके साथ मानसिक समागम किया। उससे धूमकी- सी कान्तिवाले विशालकाय पुत्र उत्पन्न हुए। उनका वर्ण रात्रि और संध्याके संयोगकॉलमें छाये हुए बादलोंके समान था। वे अपने प्रचण्ड तेजसे सबको जला रहे थे और ब्रह्माकी निन्दा करते हुए रोते-से वे इधर-उध्र दौड़ रहे थे। इस प्रकार रोने और दौड़नेके कारण वे 'रुद्र' कहे जाते हैं। निऋति, शम्भु, तीसरे अपराजित, मृगव्याध, कपर्दी, दहन, ईश्वर, अहिर्बुध्न्य, भगवान् कपाली, पिंगल और महातेजस्वी सेनानी ये ग्यारह रुद्र कहलाते हैं ॥ २९-३९ ॥ [मत्स्य पुराण अध्याय 171]➜

@vaishnav_supremacy

(श्रीमद् भगवदम पुराण .स्कंद.3.अध्याय.8.श्लोक.15) तल्लोकपद्मं स उ एव विष्णुः प्रावीविशत्सर्वगुणावभासम् ।
तस्मिन् स्वयं वेदमयो विधाता स्वयम्भुवं यं स्म वदन्ति सोऽभूत् ॥ १५ ॥
उस विश्वव्यापी कमल पुष्प में भगवान विष्णु ने स्वयं परमात्मा के रूप में प्रवेश किया और जब वह समस्त भौतिक गुणों से युक्त हो गया, तो वैदिक ज्ञान का व्यक्तित्व उत्पन्न हुआ, जिसे हम स्वयंभू ब्रह्मा कहते हैं।)↓

(श्रीमद् भगवदमपुराण स्कंद 3.अध्याय.12.श्लोक.7-10)
यदरोदीः सुरश्रेष्ठ सोद्वेग इव बालकः ।
ततस्त्वामभिधास्यन्ति नाम्ना रुद्र इति प्रजाः ॥
तत्पश्चात् ब्रह्माजी ने कहा: हे देवराज! तुम जो अत्यन्त व्याकुल होकर रोये हो, इसलिये सब लोग तुम्हें रुद्र नाम से पुकारेंगे।)↓

(ब्रह्मवैवर्तपुराणम् कृष्ण-जन्म-खण्ड, अध्याय 41 श्लोक ७०)
Sanskrit English edition
नाभिपद्मोद्भवो ब्रह्मा तस्यैव जलशायिनः । भालोद्भवस्तस्य स्रष्टुः शंकरश्चन्द्रशेखरः ।॥७०॥
समुद्र में सर्प शय्या पर लेटे महाविष्णु की नाभि से चतुर्मुखी ब्रह्मा प्रकट हुए। ब्रह्मा के माथे से भगवान शिव प्रकट हुए)➜

@vaishnav_supremacy

(वराह भगवान बोले

सृष्ट्वा नारास्ता अथो तत्र चाहं

येन स्यान्मे नाम नारायणेति ।

कल्पे कल्पे तत्र संयामि भूयः सुप्तस्य मे नाभिजः स्याद् यथाद्यः ।। २.११ ।।

एवंभूतस्य मे देवि नाभिपद्म चतुर्मुखः । उत्तस्थौ स मया प्रोक्तः प्रजाः सृज महामते ।। २.१२ ।। एवमुक्त्वा तिरोभावं गतोऽहं सोऽपि चिन्तयन् । आस्ते यावज्जगद्धात्रि नाध्यगच्छत किंचन ।। २.१३ ।। तावत् तस्य महारोषो ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः। संभूय तेन बालः स्यादङ्के रोषात्मसंभवः ।। २.१४ ।। यो रुदन् वारितस्तेन ब्रह्मणाऽव्यक्तमूर्त्तिना । ब्रवीति नाम मे देहि तस्य रुद्रेति सो ददौ ।। २.१५ ।। श्री वराह ने कहा, "जल की रचना करने और उसमें विश्राम करने के कारण, मैं 'नारायण' कहलाया। प्रत्येक कल्प में, मैं, बार-बार, जल पर लेटता हूँ। और वहाँ सोते समय, नाभि से एक कमल का फूल निकला, जैसे अभी। फिर, नाभि-कमल से, चार मुख वाले (ब्रह्मा) प्रकट हुए... यह रहस्यमय तरीके से जन्मे ब्रह्मा बहुत क्रोधित हुए और उस क्रोध से एक बालक उत्पन्न हुआ.... लड़का रो रहा था और उसे रोक दिया गया ब्रह्मा. और ब्रह्मा ने उन्हें 'रुद्र' नाम दिया (~वराह पुराण, अध्याय 2, श्लोक 12-16 संस्कृत एडिशन वराहपुराणम्/अध्यायः ००२)

अध्यायः ५ / Chapter 5

हरिरुवाच

कृत्वेमुत्रसंस्थानं प्रजासर्गं तु मानसम्॥
अथासृजत्प्रजाकर्तन्मासांस्तनयान्प्रभुः॥ १॥
धर्मं रुद्रं मनु चैव सनकं च सनातम्॥
भृगुं सनत्कुमारं च रुचिं श्रद्धां तथैव च॥ २॥
मरीचिमत्र्यङ्गिरसौ पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम्॥
वसिष्ठं नारदं चैव पितृन्बर्हिषदस्तथा॥ ३॥
अग्निष्वात्तांश्च कव्यादानाज्यपांश्च सुकालिनः॥
उपहूतांस्तथा दीप्यां(प्रा)स्वींश्च मूर्तिविवर्जितान्॥४॥

Hari said:—Having created me world and all orders of beings the Lord created his mind-begotten sons for multiplying his creation; namely Dharma, Rudra, Manu, Sanaka, Sanātana, Bhṛgu, Sanatkumāra, Ruci, Śuddha, Marīci, Atri, Aṅgirā, Pulastya, Pulaha, Kratu, Nārada and the Patṛis Varhiṣadas.

चतुरो मूर्त्तियुक्तांश्च अंगुष्ठाद्दक्षमीश्वरम्॥
वामांगुष्ठात्तस्य भार्य्यामसृजत्पद्मसम्भवः॥ ५॥
तस्यां तु जनयामास दक्षो दुहितरः शुभाः॥
ददौ ता ब्रह्मपुत्रेभ्यः सतीं रुद्राय दत्तवान्॥ ६॥

The Lotus-sprung deity, from his right thumb, created Dakṣa endued with four forms and his wife from his left thigh. Dakṣa begat on her beautiful daughters. He gave them away unto the sons of Brahmā and conferred Sati on Rudra.

रुद्र पुत्रा बभूवर्हि असंख्याता महाबलाः॥
भृगवे च ददौ ख्यातिं रूपेणाप्रतिमां शुभाम्॥ ७॥
भृगोर्धाताविधातारौ जनयामास सा शुभा॥
श्रियं च जनयामास पत्नी नारायणस्य या॥ ८॥

Numberless, highly powerful sons were born unto Rudra. He conferred the auspicious Khyāti, matchless in beauty, on Bhṛgu. Bhṛgu begat on her Dhātā and Vidhata. He also begat Śrī who was Nārāyaṇa's wife.

तस्यां वै जनयामास बलोन्मादौ हरिः स्वयम्॥
आयतिर्नियतिश्चैव मनोः कन्ये महात्मनः॥ ९॥

Hari begat on her himself Bala and Ukṣmādi. Ayati and Nīyati were the two daughters of the high-souled Manu.

धाताविधात्रोस्ते भार्य्ये तयोर्जातौ सुतावुभौ॥
प्राणश्चैव मृकण्डुश्च मार्कण्डेयो मृकण्डुतः॥ १०॥

They were the wives of Dhātā and Vidhātā. They gave birth to two sons, Prāṇa and Mṛkaṇḍu. Mārkaṇḍeya was the son Mṛkaṇḍu.

पत्नी मरीचेः सम्भूतिः पौर्णमासमसूयत॥
विरजाः सर्वगश्चैव तस्य पुत्रौ महात्मनः॥ ११॥

Marīci's wife Sambhūti gave birth to Pourṇamāsa. Virāja and Sarvaga were the two sons of that high-souled one.

स्मृतेश्चाङ्गिरसः पुत्राः प्रसूताः कन्यकास्तथा॥
सिनीवाली कुहूश्चैव राका चानुमतिस्तथा॥ १२॥

Aṅgirās begat on Smṛti sons and daughters namely Śinīvali, Kuhū, Rākā and Aṇumati.

अनसूया तथैवात्रेर्जज्ञे पुत्रानकल्मषान्॥
सोमं दुर्वाससं चैव दत्तात्रेयं च योगिनम्॥ १३॥

Atri begat on Anasūyā sinless sons, Soma, Durvāsā and the yogin Dattātreya.

प्रीत्यां पुलस्त्यभार्य्यायां दत्तोलिस्तत्सुतोऽभवत्॥
कर्म्मशश्चार्थवीरश्च सहिष्णुश्च सुतत्रयम्॥ १४॥
क्षमा तु सुषुवे भार्य्या पुलहस्य प्रजापतेः॥
क्रतोश्च सुमतिर्भार्य्या बालखिल्यानसूयत॥ १५॥
षष्टिर्यानि सहस्राणि ऋषीणामूर्ध्वरेतसाम्॥
अंगुष्ठपर्वमात्राणां ज्वलद्भास्करवर्चसाम्॥ १६॥

Pulastya begat on Prīti Dottoli. Three sons, Karman, Arthavirā and Sahiṣṇu were begat on his wife Sumati the sixty thousand Ṛṣis of controlled passions by name Vālakhilyas. They were all of the height of a thumb and effugent like the burning sun.

ऊर्ज्जायां तु वसिष्ठस्य सप्ताजायन्त वै सुताः॥
रजोगात्रोर्द्ध्वबाहुश्च शरणश्चानघस्तथा॥ १७॥
सुतपाः शुक्र इत्येते सर्वे सप्तर्षयोऽमलाः॥
स्वाहां प्रादात्स दक्षोऽपि सशरीराय वह्नये॥ १८॥

Vasiṣṭha begat on Urjjā seven sons, viz, Rajo, Gātra, Ūrdhavāhu, Śaraṇa, Anagha, Sutapa, Śukra. These are the seven Ṛṣis.

गरुडः स हरिस्तेन प्रोक्तं श्रीकश्यपाय च॥ ८॥
तच्छ्रीमद्गारुडं पुण्यं सर्वदं पठतस्तव॥
वक्ष्ये व्यासं नमस्कृत्य शृणु शौनक तद्यथा॥ ९॥

Garuḍa is Hari. He related it unto Kaśyapa. The auspicious Garuḍa Purāṇa, when read, gives piety and all objects. Hear, O Śounaka, how Hari describe it unto Rudra.

॥ इति श्रीगारुडे महापुराणे पूर्वखण्डे प्रथमांशाख्ये आचारकाण्डे विषयं निरूपणं नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

अध्यायः ४ / Chapter 4

रुद्र उवाच

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वतराणि च॥
वंशानुचरितं चैव एतद् ब्रूहि जनार्दन॥ १॥

Rudra said—O Janārddana, do thou described the primary and secondary creations, the families, Manvantaras as, well as the histories of the families.

हरिरुवाच

शृणु रुद्र प्रवक्ष्यामि सर्गादीन्पापनाशनान्॥
सर्गस्थितिलयान्तां तां विष्णोः क्रीडां पुरातनीम्॥ २॥

Hari said:—Hear, O Rudra, I will describe the old sport of Viṣṇu, consisting of creation, preservation and destruction, which destroys all sins.

नरनारायणो देवो वासुदेवो निरञ्जनः॥
परमात्मा परं ब्रह्म जगज्जनिलयादिकृत॥ ३॥

The Lord Vāsudeva, void of passion, Nara-Nārāyaṇa, is the great Soul, Para Brahma, the creator and the destroyer of the universe.

तदेतत्सर्वमेवैतद्व्यक्ताव्यक्तस्वरूपवत्॥
तथा पुरुषरूपेण कालरूपेण च स्थितम्॥ ४॥

All this exists in Him as both manifest and unmanifest. He exists in the form of Puruṣa (malebeing) arid Kāla (Time).

व्यक्तं विष्णुस्तथाव्यक्तं पुरुषः काल एव च॥
क्रीडतो बालकस्येव चेष्टास्तस्य निशामय॥ ५॥

Viṣṇu is both manifest and unmanifest. He is Puruṣa and Kāla. Understand, his actions are like those of a sportive child.

अनादिनिधनो धाता त्वनन्तः पुरुषोत्तमः॥
तस्माद्भवति चाव्यक्तं तस्मादात्मापि जायते॥ ६॥

He is without beginning, the Creator; He is without end and Puruṣottama (the most exalted of male beings). From him originate the unmanifest as well as the soul.

तस्माद्बुद्धिर्मनस्तस्मात्ततः खं पवन स्ततः॥
तस्मात्तेजस्ततस्त्वापस्ततो भूमिस्ततोऽभवत्॥ ७॥

From him emanate the intellect, mind, the Tattvas (principles) ether, air, fire, water and earth.

अण्डो हिरण्मयो रुद्र तस्यान्तः स्वयमेव हि ॥
शरीरग्रहणं पूर्वं सृष्ट्यर्थं कुरुते प्रभुः॥ ८॥

O Rudra, He is the golden egg and is himself his own end. The Lord assumes a body for the purposes of creation.

ब्रह्मा चतुर्मुखो भूत्वा रजोमात्राधिकः सदा॥
शरीरग्रहणं कृत्वाऽसृजदेतच्चराचरम्॥ ९॥

Having assumed the body of Brahmā with four mouths, pervaded by the quality of Rajas (darkness) he creates the entire world, moveable and stationery.

अण्डस्यान्तर्जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्॥
स्रष्टा सृजति चात्मानं विष्णुः पाल्यं च पातिच॥ १०॥

This entire universe consisting of the celestials, Asuras and human beings lies inside the egg.

उपसंह्रियते चान्ते संहर्त्ता च स्वयं हर॥
ब्रह्मा भूत्वासृजद्विष्णुर्जगत्पाति हरिः स्वयम्॥ ११॥

As Creator he creates the universe; as Viṣṇu he protects it; and he destroys it in the end. Hari himself is the destroyer. Having assumed the body of Brahmā Hari creates the universe and as Viṣṇu he protects it.

रुद्ररूपी च कल्पान्ते जगत्संहरतेऽखिलम्॥
ब्रह्मा तु सृष्टिकालेऽस्मिञ्जलमध्यगतां महीम्॥ १२॥

And assuming the form of Rudra the Lord destroys the universe at the end of a Kalpa.

सैंतालीसवाँ अध्याय

कौष्टुकिरुवाच

यथा ससर्ज्ज वै ब्रह्मा भगवानादिकृत् प्रजाः।
प्रजापतिपतिर्देवस्तन्मे विस्तरतो वद ॥ १ ॥

मार्कण्डेय उवाच

कथयाम्येप ते ब्रह्मन् ससर्ज्ज भगवान् यथा।
लोककृच्छाश्वतः कृत्स्नं जगत् स्थावर-जङ्गमम्॥२॥
पद्मावसाने प्रलये निशासुप्तोत्थितः प्रभुः।
सत्त्वोद्रिक्तस्तदा ब्रह्मा शून्यं लोकमवैक्षत ॥ ३ ॥
इमश्चोदाहरन्त्यत्र श्लोकं नारायणं प्रति।
ब्रह्मस्वरूपिणं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ॥ ४ ॥
आपो नारा वै तनव इत्यपां नाम शुश्रुम।
तासु शेते स यस्माच्च तेन नारायणः स्मृतः ॥ ५ ॥
विबुद्धः सलिले तस्मिन् विज्ञायान्तर्गतां महीम्।
अनुमानात् समुद्धारं कर्त्तुकामस्तदा क्षितेः ॥ ६ ॥
अकरोत् स तनूरन्याः कल्पादिषु यथा पुरा।
मत्स्यकूर्म्मादिकास्तद्वद्वाराहं वपुरास्थितः ॥ ७ ॥
वेदयज्ञमयं दिव्यं वेदयज्ञमयो विभुः।
रूपं कृत्वा विवेशाप्सु सर्व्वगः सर्व्वसम्भवः ॥ ८ ॥
समुद्धृत्य च पातालान्मुमोच सलिले भुवम्।
जनलोकस्थितैः सिद्धैश्चिन्त्यमानो जगत्पतिः॥ ९ ॥
तस्योपरि जलौघस्य महती नौरिव स्थिता।
विततत्वात् तु देहस्य न मही याति संप्लवम्॥ १०॥
ततः क्षितिं समीकृत्य पृथिव्यां सोऽसृजद्गिरीन्।
प्राक्सर्गे दह्यमाने तु तदा संवर्त्तकाग्निना।
तेनाग्निना विशीर्णास्ते पर्व्वता भुवि सर्व्वशः ॥११॥
शैला. एकार्णवे मग्ना वायुनापस्तु संहताः।
निपक्ता यत्र यत्रासंस्तत्र तत्राचलाऽभवन् ॥१२॥
भूविभागं ततः कृत्वा सप्तद्वीपोपशोभितम्।
भूराद्यांश्चतुरो लोकान् पूर्व्ववत् समकल्पयत्॥१३॥
सृष्टिं चिन्तयतस्तस्य कल्पादिषु यथा पुरा।
अबुद्धिपूर्व्वकस्तस्मात् प्रादुर्भूतस्तमोमयः ॥१४॥
तमो मोहो महामोहस्तामिस्रो ह्यन्धसंज्ञितः।

कौष्टुकिजी बोले—

जिस प्रकार भगवान् आदिकर्ता प्रजापति, देवताओं के पति ब्रह्मा ने प्रजाओं को रचा, वह मुझसे विस्तार पूर्वक कहिये ॥ १ ॥

मार्कण्डेयजी बोले—

हे कौष्टुकिजी! जिस प्रकार कि लोक-कर्ता, शाश्वत ब्रह्माजी ने स्थावर और जङ्गम संसार को सृजा वह मैं आपसे कहताहूँ ॥२॥ पद्मकल्पके अन्त में जो प्रलय हुई उसकी रात्रि की समाप्तिपर ब्रह्माजी सोकर उठे तो उन्होंने संसारको सूना देखा ॥ ३ ॥ तो ब्रह्माजी नें ब्रह्मस्वरूप, जगत् की उत्पत्ति के कारण, अव्यय, देव नारायण के प्रति ये स्तुति की ॥ ४ ॥ आप, नारा और तनु जल के नाम कहे गये हैं, जल में शयन करने के कारण आपका नाम नारायण प्रसिद्ध है ॥५॥ इसपर नारायण उठे और जल में पृथ्वी को डूबा हुआ समझ कर यह अनुमान किया कि ब्रह्माजी को उसके उद्धारकी इच्छा है ॥६॥ उन्होंने दूसरा शरीर धारणकिया और जिस तरह कि पहिले कल्पों में मत्स्य और कच्छप का शरीर धारण किया था अबकी बार वाराह रूप धारण किया ॥७॥ सब स्थानों में गति वाले और सबके कारणभूत तथा वेद यज्ञमय परमेश्वरने यज्ञ संयुक्त वेदों का उद्धार किया और फिर वाराहरूप से जल में प्रवेश कर गये ॥८॥ पाताल से पृथ्वी को लाकर जल के ऊपर रक्खा और उस समय जन लोक के रहने वाले सिद्धों ने जगत्पतिका चिंतवन किया ॥ ९ ॥ उस जल के ऊपर पृथ्वी को नौका के समान स्थित किया और कच्छप रूप धारण कर पृथ्वी को अपने ऊपर लिया जिससे वह डूब न सके ॥१०॥ फिर पृथ्वी को एकसा करके पृथ्वी पर पहाड़ों की रचना की, पहिले सर्गमें पहाड़ संवर्तक अग्नि से जलकर और खण्ड-खण्ड होकर पृथ्वी पर चारों तरफ़ फैल गये थे ॥११॥ और प्रलय होने पर वायु से पानी के साथ बह गये थे, उन पहाड़ों को जहाँ-जहाँ वे पहिले थे वहाँ-वहाँही रख दिया गया ॥१२॥ फिर सात द्वीपों में पृथ्वी को विभाजित किया और पहिले की तरह भूलोक आदि चारों लोकों की रचनाकी ॥१३॥ जिस तरह पहिले कल्पों में सृष्टि थी उसका चिंतवन किया और उसका ध्यान करते ही तमोमय ॥१४॥ तम, मोह, महामोह अन्ध तामिस्र और पहिलेके समान पाँच अविद्यायें

विद्वेषिणी तु या कन्या भृकुटीकुटिलानना।
तस्या द्वौ तनयौ पुंसामपकारप्रकाशकौ ॥११७॥
निर्वीजत्वं नरो याति नारी वा शौचवर्ज्जिता।
पैशुन्याभिरतं लोलमसज्जलनिषेवणम् ॥११८॥
पुरुषद्वेषिणंचैतौ नरमाक्रम्य तिष्ठतः।
मात्रा भ्रात्रा तथा मित्रैरभीष्टैः स्वजनैः परैः॥११९॥
विद्विष्टो नाशमायाति पुरुषो धर्म्मतोऽर्थतः।
एकस्तु स्वगुणाल्लोके प्रकाशयति पापकृत् ॥१२०॥
द्वितीयस्तु गुणान् मैत्रीं लोकस्यापकर्षति।
इत्येते दौःसहाः सर्व्वे यक्ष्मणः सन्ततावथ।
पापाचाराः समाख्याता यैर्व्याप्तमखिलं जगत्१२१॥

करती है ॥११६॥ और विद्वेषिणीके जिसकी भृकुटि सदैव तनी रहती है दो पुत्र उत्पन्न हुए, पहिला पुरुषों का उपकारक और दूसरा प्रकाशक ॥११७॥ जो पुरुष नपुंसक हो तथा जो स्त्री अपवित्र हो, चुगली खाने में जिसकी रुचि हो, जो चञ्चल हो अथवा अशुद्ध जल से स्नान करताहो ॥११८॥ जिस पुरुष में द्वेष भाव हो ऐसे पुरुषों में ये दोनों प्रवेश कर जाते हैं तथा माता, भ्राता, मित्र, प्रिय और स्वजनों से ॥ ११९॥ जो विरोध करा कर मनुष्य के धर्मार्थ को नष्ट करता है वह प्रकाशक अपने गुण से संसार में पापी को प्रगट करता है ॥ १२०॥ दूसरा गुणों और मित्रता का नाश कर देता है। हे क्रौष्टुकिजी! यह दुःसह की इन सब सन्तानों का जो पापी हैं तथा जिनसे सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है मैंने आपसे वर्णन किया ॥१२१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणमें दौःसहोत्पत्ति समापन नाम ५१वाँ अ० समाप्त ।

बावनवां अध्याय

मार्कण्डेय उवाच

इत्येष तामसः सर्गो ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः।
रुद्रसर्गं प्रवक्ष्यामि तन्मे निगदतः शृणु ॥ १ ॥
तनयाश्च तथैवाष्टौ पत्न्यः पुत्राश्च ते तथा।
कल्पादावात्मनस्तुल्यं सुतं प्रध्यायतः प्रभोः ॥ २ ॥
प्रादुरासीदथाङ्केऽस्य कुमारो नीललोहितः।
रुरोद सुस्वरं सोऽथ द्रवंश्च द्विजसत्तम ॥ ३ ॥
किं रोदिपीति तं ब्रह्मा रुदन्तं प्रत्युवाच ह।
नाम देहीति तं सोऽथ प्रत्युवाच जगत्पतिम् ॥ ४ ॥
रुद्रस्त्वं देव नाम्नासि मा रोदीर्धैर्य्यमावह।
एवमुक्तस्ततः सोऽथ सप्तकृत्वो रुरोद ह ॥ ५ ॥
ततोऽन्यानि ददौ तस्मै सप्त नामानि वै प्रभुः।
स्थानानि चैषामष्टानां पत्नीः पुत्रांश्च वै द्विज॥ ६ ॥
भवं सर्व्वं तथेशानं तथा पशुपतिं प्रभुः।
भीममुग्रं महादेवमुवाच स पितामहः ॥ ७ ॥
चक्रे नामान्यथैतानि स्थानान्येषां चकार ह ॥ ८ ॥
सूर्य्यो जलं मही वह्निर्वायुराकाशमेव च।
दीक्षितो ब्राह्मणः सोम इत्येतास्तनवः क्रमात्।

मार्कण्डेयजी बोले—

अव्यक्तजन्मा ब्रह्माजी का तामस सर्ग तो यह हुआ, अब उनके रुद्र सर्ग को कहता हूँ सुनो ॥१॥ जब प्रभु ब्रह्माजी ने कल्प के आदि में अपने समान पुत्र उत्पन्न करने का विचार किया तो उनके आठ पुत्र और आठ पुत्रियां उत्पन्न हुईं और वे पुत्रियां उन आठ पुत्रों की स्त्रियां हुईं ॥ २ ॥ हे विप्रवर! ब्रह्माजी के अङ्क से जो नीलवर्ण पुत्र हुआ वह दौड़ कर बड़े ऊंचे स्वर से रोने लगा ॥ ३ ॥ ब्रह्माजी ने उस रोते हुए पुत्र से पूछा कि तुम क्यों रोते हो? उसने कहा कि मेरा नाम रखिये। इसपर जगत् के स्वामी ब्रह्माजी उससे बोले ॥४॥ हे देव! तुम मत रोओ, धैर्य रक्खो, तुम्हारा नाम रुद्र होगा। उस से ऐसा कहने पर वे सातों भी रोने लगे ॥ ५ ॥ तब प्रभु ब्रह्माजी ने उन सातों के नाम भी रखदिये इन आठों के स्थान तथा इनकी स्त्री और पुत्रों के नाम भी सुनो ॥ ६ ॥ पितामह ने उनके भव, सर्व, ईशान, पशुपति, भीम, उग्र और महादेव ये सात नाम रक्खे ॥७॥ इस प्रकार नामकरण करके उनका स्थान भी निश्चित किया ॥८॥ सूर्य, जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश और चन्द्रमा, ये क्रमशः ब्रह्माजी के उपरोक्त सात पुत्रों के स्थान हैं तथा

स्वर्णंपत्रे प्रकुरुते ब्रह्मत्वादर्शकारणात् ॥६
ब्रह्मा तु सलिले तस्मिन्नवाग् भूत्वा तदा चरत् ।
निशायामिव खद्योत: प्रावृट्काले ततस्तत: ॥७

श्रीसूतजी ने कहा—इस पृथिवी तत्व में सबसे पूर्व जल ही जल सर्वत्र था और यह शील तथा प्रलीन था। इसमें उस समय कुछ भी नहीं जाना जाता था।१। केवल एक समुद्र ही था और उस सागर में सभी स्थावर (अचर) और जङ्गम (चर) नष्ट हो गये थे। विभु (व्यापक) वह ब्रह्मा जी उस समय में सहस्रों पादों और नेत्रों वाले हो जाया करते हैं।२। सहस्रों शीर्षों वाले, सुवर्ण के समान जिनका वर्ण था और जो इन्द्रियों की पहुँच से परे थे अर्थात् अप्रत्यक्ष थे ऐसे पुरुष नारायण नाम वाले ब्रह्मा उस समय में समुद्र में शयन कर रहे थे।३। सत्व के उद्रेक से निषिद्ध होते हुए उन्होंने उस समय में इस लोक को शून्य देखा था। यहाँ पर भगवान् नारायण के विषय में इन निम्न लिखित श्लोक को उदाहृत किया करते हैं।४। जलों को नारा कहा गया है और ये जल ही नर के आत्मज हैं। ये जल ही उन नारायण प्रभु के निवास स्थान है अतएव प्रभु का नाम नारायण कहा गया है।५। सहस्रों युगों के तुल्य काल तक वे प्रभु वहाँ पर निवास करते हुए स्थित रहे थे। ब्रह्मत्व के अदर्शन के कारण से वे स्वर्ण पत्र किया करते हैं।६। उस जल में ब्रह्माजी अवाक् होकर उस समय में विचरण कर रहे थे जिस तरह से वर्षा ऋतु में रात्रि में खद्योत चकमता हुआ यहाँ से वहाँ घूमा करता है।७।

ततस्तु सलिले तस्मिन् विज्ञायांतर्गते महत् ।
अनुमानादसंमूढो भूमेरुद्धरणं प्रति ॥८
ॐकाराष्टतनुं त्वन्यां कल्पादिषु यथा पुरा ।
ततो महात्मा मनसा विव्यरूपमचिंतयत् ॥९
सलिलेऽवप्लुतां भूमिं दृष्ट्वा स समचिंतयत् ।
किं तु रूपमहं कृत्वा सलिलादुद्धरे महीम् ॥१०
जलक्रीडासमुचितं वाराहं रूपमस्मरत् ।
अदृश्यं सर्वभूतानां वाङ्मयं ब्रह्मसंज्ञितम् ॥११

नव ब्राह्मण इत्येते पुराणे निश्चयं गताः ।
ब्रह्मा यथात्मकानां तु सर्वेषां ब्रह्मयोगिनाम् ॥७१
ततोऽसृजत्पुनर्ब्रह्मा रुद्रं रोषात्मसंभवम् ।
संकल्पं चैव धर्मं च सर्वेषामेव पर्वतान् ॥७२
सोऽसृजद्व्यवसायं तु ब्रह्मा भूतं सुखात्मकम् ।
संकल्पाच्चैव संकल्पो जज्ञे सोऽव्यक्तयोनिनः ॥७३
प्राणाद्दक्षोऽसृजद्वाचं चक्षुर्भ्यां च मरीचिनम् ।
भृगुश्च हृदयाज्जज्ञे ऋषिः सलिलयोनिनः ॥७४
शिरसश्चांगिराश्चैव श्रोत्रादत्रिस्तथैव च ।
पुलस्त्यश्च तथोदानाद्व्यानात्तु पुलहस्तथा ॥७५
समानतो वसिष्ठश्च ह्यपानान्निर्ममे क्रतुम् ।
इत्येते ब्रह्मण श्रेष्ठाः पुत्रा वै द्वादश स्मृताः ॥७६
धर्मादयः प्रथमजा विज्ञेया ब्रह्मणः स्मृताः ।
भृग्वादयस्तु ये सृष्टा न च ते ब्रह्मवादिनः ॥७७
गृहमेधिपुराणास्ते विज्ञेया ब्रह्मणः सुताः ।
द्वादशैते प्रसूयंते सह रुद्रेण च द्विजाः ॥७८

ये नौ ब्रह्मा ही हैं—ऐसा पुराण में निश्चय को प्राप्त हुए थे। इन सब ब्रह्मयोगी आत्मकों का ब्रह्मा के ही समान प्रभाव था।७१। इसके अनन्तर ब्रह्माजी ने रोष रूपी अपने आत्मज रुद्रदेव का सृजन किया था। सङ्कल्प और धर्म का सृजन किया था और सभी के पर्वतों की रचना की थी।७२। उन ब्रह्माजी ने व्यवसाय की सृष्टि की थी और ब्रह्मा ने सुखात्मक भूत की रचना की थी। उन्होंने अव्यक्त योगी सङ्कल्प से सङ्कल्प को जन्म दिया था।७३। दक्ष ने प्राण वाक् का सृजन किया था और चक्षुओं से मरीचि को उत्पन्न किया था। सलिल योगी के हृदय से भृगु ऋषि उत्पन्न हुए थे।७४। शिर से अङ्गिरा ने जन्म ग्रहण किया था। उदान वायु से पुलस्त्य उत्पन्न हुए व्यान से पुलह का उद्भव हुआ था।७५। समान नामक वायु से वसिष्ठ ऋषि की उत्पत्ति हुई थी, अपान वायु से क्रतु ने जन्म ग्रहण किया था। ये इतने ब्रह्माजी के परमश्रेष्ठ बारह पुत्र समुत्पन्न हुए थे। हे

अप एव ससर्ज्जादौ तासु वीर्य्यमथासृजत्। आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः॥१.३८
अयनं तस्य ताः पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः। हिरण्यवर्णमभवत्तदण्डमुदकेशयम्॥ १.३९ ॥
तत्र जज्ञे ब्रह्मा स्वयम्भूरिति नः श्रुतम्।हिरण्यवर्णो भगवानषित्वा परिवत्सरम्॥ १.४०
नारायणात्मकानां तु सप्तानां ब्रह्मजन्मनाम्। ततोऽसृजत् पुरा ब्रह्मा रुद्रं रोषात्मसम्भवम्॥ १.४५ ॥
प्रधान से नाना प्रकार के प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा रखने वाले स्वयंभू भगवान ने आरंभ में केवल जल की ही रचना की। उन्होंने उनमें शक्ति भर दी। जल को नर (नर-मनुष्य से उत्पन्न) कहा जाता है; जल नर की संतान है। आरंभ में वे ही उनके निवास स्थान थे। इसलिए उन्हें नारायण के नाम से याद किया जाता है। सोने के गर्भ वाला एक अंडा आकार लेकर जल पर तैरने लगा।
अयन के कारण ही पहले उन्हें नारायण कहा गया। वह सोने के समान दीप्तिमान दण्ड (तपस्या या ऊर्जा) से जल में स्थित हो गए। वहीं पर स्वयंभू ब्रह्मा का जन्म हुआ, ऐसा हमने सुना है। भगवान ने एक वर्ष तक सोने के समान दीप्तिमान स्वरूप में तप किया। ब्रह्मा के सात पुत्रों के बाद, जो नारायण के समान थे, ब्रह्मा ने क्रोध से रुद्र को उत्पन्न किया।
(ब्रह्म पुराण अध्याय 1 श्लोक 41-46)↓

अखिलजगत्स्त्रष्टुर्भगवतो नारायणस्य नाभिसरोजसमुद्भवाब्जयोनेर्ब्रह्मणः
सम्पूर्ण जगत्के रचयिता भगवान् नारायणके नाभि-कमलसे उत्पन्न हुए भगवान् ब्रह्माजीके (विष्णु पुराण अंश - ४ अध्याय - 6)↓
कल्पादावात्मनस्तुल्यं सुतं प्रध्यायतस्ततः । प्रादुरासीत्प्रभोरङ्के कुमारो नीललोहितः ॥ २ रुरोद सुस्वरं सोऽथ प्राद्रवद्विजसत्तम। किं त्वं रोदिषि तं ब्रह्मा रुदन्तं प्रत्युवाच ह।। नाम देहीति तं सोऽथ प्रत्युवाच प्रजापतिः । रुद्रस्त्वं देव नाम्नासि मा रोदीर्धैर्यमावह। ३ एवमुक्तः पुनः सोऽथ सप्तकृत्वो रुरोद वै ॥
आदिमें अपने समान पुत्र उत्पन्न होनेके लिये चिन्तन करते हुए ब्रह्माजीकी गोदमें नीललोहित वर्णके एक कुमारका प्रादुर्भाव हुआ ॥ २॥
हे द्विजोत्तम! जन्मके अनन्तर ही वह जोर- जोरसे रोने और इधर-उधर दौड़ने लगा। उसे रोता देख ब्रह्माजीने उससे पूछा- "तू क्यों रोता है?" ॥ ३॥ उसने कहा- "मेरा नाम रखो।" तब ब्रह्माजी बोले- 'हे देव! तेरा नाम रुद्र है, अब तू मत रो, धैर्य धारण ४ कर।' ऐसा कहनेपर भी वह सात बार और रोया (विष्णु पुराण अध्याय - 8 अंश - १)➜

@vaishnav_supremacy

संवादो विष्णुना सार्धं शंकरस्य महात्मनः । वरदानं तथापूर्वमन्तर्धानं पिनाकिनः ॥ ८० ॥ वधश्च कथितो विप्रा मधुकैटभयोः पुरा। अवतारोऽथ देवस्य ब्रह्मणो नाभिपङ्कजात् ॥८१ प्रादुर्भावो महेशस्य ललाटात् कथितस्ततः ॥ ८३ रुद्राणां कथिता सृष्टिर्ब्रह्मणः प्रतिषेधनम् । भूतिश्च देवदेवस्य वरदानोपदेशकौ ॥ ८४॥
(विष्णु) के नाभिकमलसे ब्रह्माके उत्पन्न हुए ब्रह्माके) मस्तकसे महेश्वरके प्रादुर्भावका वर्णन किया गया है। रुद्रोंकी सृष्टि करनेपर ब्रह्माके द्वारा (कूर्म पुराण अध्याय 44)↓

अप एव ससर्जादौ तासु वीर्यमवासृजत् । आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः ।। ७।। अयनन्तस्य ताः पूर्वन्तेन नारायणः स्मृतः । हिरण्यवर्णमभवत् तदण्डमुदकेशयम् ।। ८ ।। साध्यास्तैरयजन्देवान् भूतमुच्चावचं भुजात् । सनत्कुमारं रुद्रञ्च ससर्ज क्रोधसम्भवम् ।। १४

8. उनमें सबसे पहले गति होने के कारण उन्हें नारायण कहा गया । जल में पड़ा वह अंडा सुनहरे रंग का था। 9-10. उसमें से ब्रह्माजी स्वतः उत्पन्न हुए, जिन्हें हम स्वयंभू कहते हैं। एक वर्ष तक उसमें रहने के पश्चात हिरण्यगर्भ ने उस अण्ड के दो टुकड़े कर दिए, स्वर्ग और पृथ्वी। उन दो टुकड़ों के बीच में भगवान ने आकाश की रचना की।11-14 प्रजापति ने अपने क्रोध से रुद्र की और देवता की सृष्टि करी (अग्नि पुराण अध्याय 17)↓

हर उवाचरजोयुक्त नमस्तेऽस्तु ब्रह्ममूर्ते सनातन। त्वया सर्वमिदं नाथ जगत्सृष्टं चराचरम् ॥ १६ सत्त्वाधिष्ठित लोकेश विष्णुमूर्ते अधोक्षज । प्रजापाल महाबाहो जनार्दन नमोऽस्तु ते ॥ १७ तमोमूर्ते अहं होष त्वदंशक्रोधसंभवः । गुणाभियुक्त देवेश सर्वव्यापिन् नमोऽस्तु ते ॥ १८ शंकर ने कहा विष्णु कहा
रजोगुण, सनातन, ब्रह्ममूर्ति ! आपको नमस्कार है। नाथ! आपने इस सम्पूर्ण चराचर विश्वकी रचना की है। सत्त्वगुणके आश्रय लोकेश ! विष्णुमूर्ति, अधोक्षज, प्रजापालक, महाबाहु, जनार्दन ! आपको नमस्कार है। हे तमोमूर्ति। मैं आपके अंशभूत क्रोधसे उत्पन्न हूँ। हे महान् गुणवाले सर्वव्यापी देवेश ! आपको नमस्कार है॥ १४-१८ ॥(वामन पुराण अध्याय 3)➔

@vaishnav_supremacy

getwisdom.in

१८ महापुराण | 9. भविष्य पुराण
ब्राह्म पर्व | अध्याय - 2
Page 2,339
13
← अध्याय →

द्वितीयोऽध्यायः १३

ततः स भगवानीशो ह्यव्यक्तो व्यञ्जयन्निदम् । महाभूतानि वृत्तौजाः प्रोत्थितस्तमनाशनः[1] ।।१०
योऽसावतीन्द्रियोऽग्राह्यः सूक्ष्मोऽव्यक्तः सनातनः । सर्वभूतमयोऽचिन्त्यः स एव स्वयमुत्थितः ।।११
योऽसौ षड्विंशको लोके तथा यः पुरुषोत्तमः । भास्करश्च महाबाहो परं ब्रह्म च कथ्यते ।।१२
सोऽभिध्याय शरीरात्स्वात्सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः । अत एव ससर्जादौ तासु वीर्यमवासृजत् ।।१३
यस्मादुत्पद्यते सर्वं सदेवासुरमानुषम् । बीजं शुक्रं तथा रेत उग्रं वीर्यं च कथ्यते ।।१४
वीर्यस्यैतानि नामानि कथितानि स्वयम्भुवा । तदण्डमभवद्धैमं ज्वालामालाकुल विभो ।।१५
यस्मिञ्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः । सुरज्येष्ठश्चतुर्वक्त्रः परमेष्ठी पितामहः ।।१६
क्षेत्रज्ञः पुरुषो वेधाः शम्भुर्नारायणस्तथा । पर्यायवाचकैः शब्दैरेवं ब्रह्मा प्रकीर्त्यते ।।१७
सदा मनीषिभिस्तात विरञ्चिः कञ्जजस्तथा[2] । आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः ।।१८
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः । अरमित्येव शीघ्राय नियताः कविभिः कृताः ।।१९
आप[3] एवार्णवीभूत्वा सुशीघ्रास्तेन ता नराः । यत्तत्कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम् ।।२०
तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते । एवं स भगवानण्डे तत्त्वमेव निरूप्य वै ।।२१

सोये हुए की तरह था ।९। तदनन्तर सर्वैश्वर्यशाली, वे भगवान् अव्यक्त रूप से जगत् को व्यक्त करते हुए, महान् भूतों को प्रकट करते हुए तथा अन्धकार-राशि को नष्ट करते हुए उठते हैं । जो इन्द्रिय-समूहों से परे, अग्राह्य, सूक्ष्म अव्यक्त, सनातन (सर्वदा एक रूप में स्थिर रहने वाले) सर्वजीवमय एवं अचिन्त्य कहे जाते हैं, वे उस अवसर पर स्वयं उठ पड़ते हैं ।१०-११। वे लोक में छब्बीसवें पदार्थ के नाम से विख्यात हैं, उन्हीं की पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्धि है । हे महाबाहु ! वे ही भास्कर एवं परम ब्रह्म भी कहे जाते हैं ।१२। वे भगवान् उस समय अपने शरीर से विविध प्रकार की प्रजाओं की सृष्टि करने की इच्छा से चिन्तन करके सर्वप्रथम जल की सृष्टि करते हैं, और उसमें वीर्य छोड़ते हैं ।१३। उसी से समस्त देवताओं, असुरों और मनुष्यों समेत इस जगत् की उत्पत्ति होती है । बीज, शुक्र, रेत, उग्र और वीर्य भी उसी को कहते हैं ।१४। स्वयंभू ने वीर्य के इन उपर्युक्त नामों का वर्णन किया है । विभु ! वह वीर्य ज्वाला-समूह से व्याप्त सुवर्ण के अण्डे के रूप में परिणत हो गया ।१५। जिसमें समस्त लोकों के पितामह भगवान् ब्रह्मा स्वयमेव उत्पन्न हुए । वे पितामह ब्रह्मा समस्त देवगणों में श्रेष्ठ, चार मुख वाले, परमेष्ठी, क्षेत्रज्ञ, पुरुष, वेधा, शम्भु एवं नारायण—इन पर्यायवाची शब्दों द्वारा पुकारे जाते हैं।१६-१७। हे तात ! मनीषी लोग उन्हें विरञ्चि, कमलोद्भव आदि नामों से सर्वदा पुकारते हैं । उनके नारायण नाम पड़ने का कारण यह है कि जल शब्द 'नार' और 'नर-पुत्र' दोनों अर्थों में प्रयुक्त होता है ।१८। वह जल (नार) ही सबसे पहले इनका अयन (निवास) रहा है, इसीलिए वे नारायण के नाम से स्मरण किये जाते हैं । कविगण (अरम्) शब्द का शीघ्र अर्थ में प्रयोग करते हैं।१९। जल ही समुद्र होकर (प्रवाह के रूप में) शीघ्रता से युक्त होता है । अतः उसका नाम 'नार' कहा जाता है । जो सबके कारणभूत, अव्यक्त, नित्य, सत् एवं असत् हैं । उनसे उत्पन्न होकर वह पुरुष लोक में 'ब्रह्मा'—नाम से प्रसिद्ध हुआ । इस प्रकार सृष्टि करने का विचार-निश्चित कर भगवान् ने उस सुवर्ण-अंड में समस्त तत्त्वों

१. तमोनाशनः । २. कर्दमस्तथा । ३. आप एकार्णवीभूता अधिप्राप्ते न ता नराः ।

Page
Old New

(भविष्य महापुराणम्
द्वितीय खण्ड
पञ्चविंशोऽध्यायः

पुनर्ब्रह्मा स चागतः । नायया मोहितस्तत्र रुरोद बहुधा तदा ।।१७९ रोयनाद्रुद्र उत्पन्नः स च तत्क्षेनकारकः । कि रोदिषि महाभाग त्वदीशो हृदये तव ।। १८०
ब्रह्मा जी से उत्पन्न हुआ वे अंत को नहीं पा सके और पुनः बाहर आ गए। माया से मोहित होकर वे वहां बहुधा रोने लगे। (१७९) उनके रोने से रुद्र उत्पन्न हुए और तुरंत कारण बने। "हे महाभाग, तुम क्यों रो रहे हो? तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे हृदय में है।" (१८०)

भविष्य पुराण द्वितीय खण्ड page number 762

इस साइड ब्रह्मा जी की उत्पत्ति
ऊपर की साइड शिवजी की उत्पत्ति

(नमोऽत्यशसे तस्मै देहिनां परमात्मने |
नारायणाय विश्वाय निर्गुणाय गुणात्मने ||
यस्य प्रसादजो ब्रह्मा रुद्रश्च क्रोधसंभवः |
योऽसौ योनिर्हि सर्वस्य स्थावरस्य चरस्य

नारायण: परमेश्वर स्वयं ही सम्पूर्ण अस्तित्व है, वह एक साथ निर्गुण और सगुण है। उनकी शांति से ब्रह्मा का जन्म हुआ और उनके क्रोध से रुद्र (शिव) का जन्म हुआ।

महाभारत शांति पर्व अध्याय .328 श्लोक.11-12)

(त्वं हि नारायणः श्रीमान पदमनाभः सनातनः । त्वयेमे स्थापिता लोकाः शक्रश्चाहं सुरेश्वरः ॥ ११ ॥

"निःसंदेह, आप ही महिमावान और सनातन नारायण हैं, जिनकी नाभि से कमल निकला है। आपसे ही ये लोक स्थापित हुए हैं और मैं इन्द्र भी देवताओं का अधिपति हूँ। (११)

त्वया सृष्टमिदं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम। त्वामेव भगवन् सर्वे प्रविशन्ति युगक्षये ॥ १२ ॥

"आपसे ही ये तीनों लोक उत्पन्न हुए, जिनमें जड़-चेतन सभी सृष्टियाँ सम्मिलित हैं। हे प्रभु! संसार-चक्र के अंत में आपमें ही सब लोग प्रवेश करते हैं।

वाल्मीकि रामायण 7 उत्तराखंड.27.11-12)

ऋग्वेद 10.121.1

हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त॒ताग्रे॑ भू॒तस्य॑ जा॒तः पति॒रेक॑ आसीत् । स दा॑धार पृथि॒वीं द्यामु॒तेमां कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

अंग्रेजी अनुवाद:

" हिरण्यगर्भ आदिकाल से विद्यमान थे; जब उनका जन्म हुआ, तब वे सृजित प्राणियों के एकमात्र स्वामी थे; उन्होंने इस पृथ्वी और स्वर्ग को धारण किया था - आइए हम दिव्य कृष्ण को आहुति देकर उनकी पूजा करें।"

सायण द्वारा भाष्य: ऋग्वेद-भाष्य

हिरण्यगर्भ: तैत्तिरीय संहिता 5.5.1.2 से तुलना करें; स्वर्ण भ्रूण, या वह जिसके पास स्वर्ण भ्रूण था, अर्थात, वह जो भ्रूण के रूप में स्वर्णमयी अंडे में था, ब्रह्मा, निर्माता; निरुक्त 10.23 से तुलना करें; यजुस् 13.4; आइए हम पूजा करें...क: यह अंतिम को छोड़कर हर ऋचा का दोहराव है। कस्मै: प्रश्नवाचक सर्वनाम का मूल, "हम किस देवता को बलि चढ़ाएं?" हो सकता है, यह एक उचित नाम हो। यह नाम इंद्र और प्रजापति के बीच एक संवाद से उत्पन्न हुआ । बाद वाले ने पूर्व से पूछा, ": तुम्हें अपनी शक्ति देने के बाद, मैं कौन हूँ?" इंद्र ने उत्तर दिया, "यदि आप पूछते हैं कि 'मैं कौन (क) हूँ?' तो वह आप हैं (यानी, आप का)।" अर्पित की जाने वाली आहुति प्रजापति को समर्पित बलि की मज्जा है, अथवा यह केक और घी की सामान्य आहुति हो सकती है, पुरोदाश)

ऋग्वेद 10.121.7

आपो॑ ह॒ यद्बृ॑ह॒तीर्विश्व॒मय॒नन्तगर्भं॒ दधा॑ना ज॒नय॑न्तिर॒ग्निम्। ततो॑ दे॒वानां॒ सम॑वर्त॒तासु॒रेक॒: कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥

आपो ह यद्बृहतिर्विश्वमायन्तरं दधाना जनयन्तिरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

आपो हा यद् बृहतिर विश्वं अयान गर्भं दधाना जनयन्तिर अग्निम् | ततो देवानां सम अवतारासुर एकः कस्मै देवाय हविषा विधेमा ||

अंग्रेजी अनुवाद:

"जब विशाल जल ब्रह्माण्ड में फैल गया, जिसमें बीजाणु था और जिसने अग्नि को जन्म दिया , तब देवताओं की एक सांस उत्पन्न हुई - आइए हम दिव्य का को आहुति देकर पूजा करें।"

सायण द्वारा भाष्य: ऋग्वेद-भाष्य

रोगाणु: अर्थात् संसार के रोगाणु ब्रह्मा । मनु में वर्णित रूप में हिरण्यगर्भ या ब्रह्म का अण्डे में तथा उससे जन्म बताया गया है; यत: तत : उस (कारण) से जिससे यह उत्पन्न हुआ है।

हिरण्यगर्भ सूक्त

मनुस्मृति 1.7
योऽसावतीन्द्रियग्राह्यः सूक्ष्मरोऽव्यक्तः सनातनः।
सर्वभूतमयोऽचिन्त्यः स एव स्वयंमुद्भौ ॥ 7 ॥
जो इन्द्रियों से परे हैं, सूक्ष्म, अव्यक्त, नित्य, समस्त सृष्टि में लीन और अचिन्त्य हैं, वे स्वयं प्रकट हुए। (७)

मनुस्मृति
1.8
सोऽभिध्याय शरीरात् स्वात् सिश्रृक्षुर्विविधाः प्रजाः।
अप एव ससर्जादौ तासु वीर्यमवासृजत् ॥ 8॥
अनेक प्रकार की सृजित वस्तुओं की सृष्टि करने की इच्छा से उसने प्रारम्भ में अपनी इच्छा मात्र से अपने शरीर से जल उत्पन्न किया और उसमें बीज डाला।—(८)

मनुस्मृति
1.9 [ब्रह्मा का जन्म]
तदण्डमभवद्धामं सहस्रांशुसमप्रभम्।
तस्मिञ्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥ 9 ॥
वह सूर्य के समान तेजस्वी स्वर्ण अण्ड बन गया; उस अण्ड में वे (हिरण्यगर्भ) स्वयं ब्रह्मा के रूप में उत्पन्न हुए, जो सम्पूर्ण जगत के पितामह हैं।—(९)

मनुस्मृति 1.10
आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसुनवः।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः ॥ दस ॥
जल को 'नार' कहा गया है - क्योंकि जल, नर की संतान है; चूँकि जल ही उस प्राणी द्वारा निर्मित प्रथम वस्तु (या उसका मूल निवास) था, इसलिए उसे 'नारायण' कहा गया है। -(10)

मनुस्मृति 1.11
यत् तत् कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदमिकम्।
तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मैति कीर्त्यते ॥ ॥
जो कारण है - अव्यक्त, नित्य और सत् तथा असत् के स्वभाव को धारण करने वाला - उस (कारण) से उत्पन्न होने वाला पुरुष लोगों में 'ब्रह्मा' नाम से वर्णित है। -(11)

शतपथ ब्राह्मण :
6:1:3:8 वहाँ एक बालक (कुमार) एक वर्ष में पैदा हुआ: वह रोया।

6:1:3:9. प्रगपति ने उससे कहा, 'मेरे लड़के, तुम क्यों रोते हो, जब तुम श्रम और परेशानी से पैदा हुए हो?' उसने कहा, 'नहीं, लेकिन मैं बुराई से मुक्त नहीं हूँ; मुझे कोई नाम नहीं दिया गया है: मुझे एक नाम दो!' इसलिए पैदा हुए लड़के को एक नाम देना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से वह बुराई से मुक्त हो जाता है; - यहां तक कि एक दूसरा, यहां तक कि एक तीसरा (नाम), क्योंकि ऐसा करने से वह बार-बार बुराई से मुक्त होता है।

6:1:3:10. उसने उससे कहा, 'तुम रुद्र हो।' और क्योंकि उसने उसे वह नाम दिया, अग्नि उसी के समान (या, वह रूप) हो गया, क्योंकि रुद्र अग्नि है। क्योंकि उसने (रुद) पुकारा इसलिए वह रुद्र है। उसने कहा, 'निश्चित रूप से, मैं उससे अधिक शक्तिशाली हूँ: मुझे एक और नाम दो

सो'रोदिद् यद् अरोदित् तद् रुद्रस्य रुद्रत्वम् (कृष्ण यजुर्वेद, तैत्तिरीय-संहिता, 1.5.1), "वह रोया, और क्योंकि वह रोया, वह रुद्र के रूप में जाना गया।"

तमिद्गर्भं॑ प्रथ॒मं द॑ध्र॒ आपो॒ यत्र॑ दे॒वाः स॒मग॑च्छन्त॒ विश्वे॑ । अ॒जस्य॒ नाभा॒वध्येक॒मर्पि॑तं॒
यस्मि॒न्विश्वा॑नि॒ भुव॑नानि त॒स्थुः ॥
तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे । अजस्य नाभावध्येकमर्पितं
यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥

"जल ने सबसे पहले भ्रूण को धारण किया, जिसमें सभी देवता एकत्रित थे, जो अजन्मे (सृष्टिकर्ता) की नाभि पर जमा था, जिसमें सभी प्राणी निवास करते हैं।"

ऋग्वेद 10.82.6

विश्वकर्मा सूक्त

Śatapathabrāhmaṇa, XI.1.6.1-11)

(अथर्ववेद 19.6.6
सामवेद > पूर्वार्चिक > अध्याय 6>
खंड: 4
पुरुष सूक्त)

Vājasaneyīsaṃhitā, XXX, I; Tattirīya Āraṇyaka, III.12
Kaṭhopaniṣad,V.9
Aitareyabrāhmaṇa, I.1
Śatapathabrāhmaṇa, I.9.39

इन सब में नाभि और जल से सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन है

नारायण उपनिषद

हुए। नारायण से भगवान् रुद्र उत्पन्न होते हैं। नारायण द्वारा ही देवराज इन्द्र प्रकट हुए। नारायण द्वारा प्रजापति का भी प्रादुर्भाव हुआ।
नारायण से ही द्वादश आदित्य उत्पन्न हुए। ग्यारह रुद्र, अष्टवसु एवं सम्पूर्ण छन्द भगवान् नारायण से प्रकट हुए । नारायण द्वारा ही प्रेरणा
प्राप्त करके सभी अपने-अपने कार्यों में लग जाते हैं तथा भगवान् नारायण में ही अन्त में विलीन हो जाते हैं। ऐसा ही यह ऋग्वेदीय उपनिषद् का कथन है ॥१॥

महा उपनिषद

अब (ईश प्रार्थना के बाद) महोपनिषद् के व्याख्यान का शुभारम्भ किया जा रहा है। सृष्टि के आदि में एकमात्र भगवान् नारायण
ही थे। इनके अतिरिक्त ब्रह्मा, शिव, आपः (जल), अग्नि एवं सोम आदि देवगण नहीं थे। ये द्युलोक तथा पृथ्वीलोक भी नहीं थे और न ही
नक्षत्र, चन्द्रमा एवं सूर्य आदि ही थे। ऐसी स्थिति में उन (विराट् पुरुष) को एकाकी रहना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा ॥१-३॥

संसाधन

शतपथ-ब्राह्मण

जूलियस एगेलिंग द्वारा | 1882 | 730,838 शब्द | ISBN-13: 9788120801134

हिंदू धर्म | वैदिक हिंदू धर्म

अभी खरीदें!

यह शतपथ ब्राह्मण XI.1.6 संस्कृत पाठ का अंग्रेजी अनुवाद है, जिसमें तकनीकी शब्दों की शब्दावली भी शामिल है। यह पुस्तक वैदिक अनुष्ठानों पर निर्देशों को परिभाषित करती है और उनके पीछे की किंवदंतियों को समझाती है। चार वेद हिंदू जीवनशैली के सर्वोच्च प्रमाण हैं जो चार जातियों (अर्थात, ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य और शूद्र) के इर्द-गिर्द घूमते हैं। शतपथ (जिसे शतपथ, शतपथ भी कहा जाता है) का अनुवाद "सौ मार्ग" होता है। इस पृष्ठ में *कांड* XI, *अध्याय* 1 के 6वें *ब्राह्मण* का पाठ है ।

सीधे यहां जाएं: फुटनोट्स , अवधारणाएं ।

कांड XI, अध्याय 1, ब्राह्मण 6

< पिछला | माता-पिता: ग्यारहवां कांडा | अगला >

[इस अध्याय का संस्कृत पाठ उपलब्ध है]

1. वास्तव में, शुरू में यह (ब्रह्मांड) पानी था, पानी का एक समुद्र। पानी ने चाहा, 'हम कैसे पैदा हो सकते हैं?' उन्होंने कड़ी मेहनत की और भक्ति की [1] , जब वे गर्म हो गए, तो एक सुनहरा अंडा पैदा हुआ। वास्तव में, उस समय वर्ष अस्तित्व में नहीं था: यह सुनहरा अंडा एक वर्ष के अंतराल के बराबर तैरता रहा।

2. एक वर्ष के समय में एक पुरुष, यह प्रजापति , उससे उत्पन्न हुआ; और इसलिए एक स्त्री, एक गाय, या एक घोड़ी एक वर्ष के अंतराल में बच्चे को जन्म देती है; क्योंकि प्रजापति एक वर्ष में पैदा हुआ था। उसने इस सुनहरे अंडे को तोड़ दिया। तब, वास्तव में, कोई आराम करने की जगह नहीं थी: केवल यह सुनहरा अंडा, जो उसे जन्म दे रहा था, एक वर्ष के अंतराल तक तैरता रहा।

3. एक वर्ष के अंत में उन्होंने बोलने की कोशिश की। उन्होंने कहा 'भू:': यह (शब्द) यह पृथ्वी बन गया; - ' भुवः ': यह यह वायु बन गया; - 'स्व:': यह वह आकाश बन गया। इसलिए एक बच्चा एक वर्ष के अंत में बोलने की कोशिश करता है, क्योंकि एक वर्ष के अंत में प्रजापति ने बोलने की कोशिश की थी।

4. जब प्रजापति पहली बार बोल रहे थे तो उन्होंने एक अक्षर और दो अक्षर के शब्द बोले; इसलिए एक बालक जब पहली बार बोलता है तो वह एक अक्षर और दो अक्षर के शब्द बोलता है।

5. इन (तीन शब्दों से मिलकर) पाँच अक्षर बने हैं: उन्होंने इन्हें पाँच ऋतुएँ बनाया, और इस प्रकार ये पाँच ऋतुएँ हैं। (पहले) वर्ष के अंत में, प्रजापति इस प्रकार उत्पन्न इन लोकों पर खड़े हो गए; जहाँ से एक वर्ष के अंत में एक बच्चा खड़ा होने की कोशिश करता है, क्योंकि एक वर्ष के अंत में प्रजापति खड़े हो गए।

6. वह एक हजार वर्ष के जीवन के साथ पैदा हुआ था: जैसे कोई दूरी पर विपरीत किनारा देख सकता है, वैसे ही उसने अपने जीवन का विपरीत किनारा (अंत) देखा।

7. संतान की चाह में वह स्तुति गाता रहा और मेहनत करता रहा। उसने प्रजनन की शक्ति अपने अंदर डाल ली। अपने मुख से उसने देवताओं को उत्पन्न किया: देवता आकाश में प्रवेश करते ही उत्पन्न हुए; और यह देवताओं का देवत्व है कि वे आकाश में प्रवेश करते ही उत्पन्न हुए (दिव)। उन्हें उत्पन्न करने के बाद, उसके लिए मानो दिन का प्रकाश हो गया; और यह भी देवताओं का देवत्व है कि, उन्हें उत्पन्न करने के बाद, उसके लिए मानो दिन का प्रकाश (दिव) हो गया।

8. और नीचे की ओर श्वास द्वारा उसने असुरों को उत्पन्न किया : वे इस पृथ्वी पर प्रवेश करते ही उत्पन्न हुए। उन्हें उत्पन्न करने के पश्चात, मानो उसके लिए अंधकार छा गया।

9. वह जानता था, 'वास्तव में मैंने अपने लिए बुराई उत्पन्न की है, क्योंकि सृजन करने के बाद मेरे लिए मानो अंधकार हो गया है।' फिर भी उसने उन पर बुराई का प्रहार किया, और इसी कारण वे पराजित हुए; इसलिए लोग कहते हैं, 'देवताओं और असुरों के बीच की लड़ाई के बारे में जो कुछ कथा में और कुछ किंवदंती में वर्णित है, वह सच नहीं है; क्योंकि तब भी प्रजापति ने उन पर बुराई का प्रहार किया था, और इसी कारण वे पराजित हुए थे।'

10. इसी संदर्भ में ऋषि ने कहा है, 'हे माघवन! तुम्हारे युद्धों के विषय में ऐसा कहा जाता है कि तुमने एक दिन भी युद्ध नहीं किया, न ही तुम्हारा कोई शत्रु है; तुमने न तो आज युद्ध किया है और न ही पहले कभी किसी शत्रु से युद्ध किया है।'

11. अब देवताओं को बनाते समय जो प्रकाश उसके पास था, उसे उसने दिन बना दिया; और असुरों को बनाते समय जो अंधकार उसके पास था, उसे उसने रात बना दिया: वे दिन और रात ये दो हैं।

12. प्रजापति ने मन ही मन सोचा, 'सब कुछ (सर्व), वास्तव में, मैंने चुपके से (ज़ार) प्राप्त किया है जिन्होंने इन देवताओं को बनाया है:' यह 'सर्वत्सर' हुआ, क्योंकि 'सर्वत्सर', निस्संदेह, ' संवत्सर (वर्ष) के समान है। और, वास्तव में, जो कोई भी इस प्रकार 'संवत्सर' को 'सर्वत्सर' के समान जानता है [2] , वह किसी भी बुराई से पराजित नहीं होता है, जो जादू कला द्वारा उस पर (ज़ार) चोरी से आती है; और जो कोई भी इस प्रकार 'संवत्सर' को 'सर्वत्सर' के समान जानता है, वह जिस किसी के विरुद्ध जादू कला का अभ्यास करता है, उसे हरा देता है।

13. प्रजापति ने मन ही मन सोचा, 'वास्तव में, मैंने यहाँ अपना ही एक प्रतिरूप, अर्थात् वर्ष, रचा है;' इसलिए वे कहते हैं, 'प्रजापति ही वर्ष है;' क्योंकि उन्होंने इसे अपना ही प्रतिरूप बनाया है:

चूँकि 'संवत्सर' और 'प्रजापति' दोनों में चार अक्षर हैं, अतः यह (वर्ष) उसका प्रतिरूप है।

14. अब, ये देवता हैं जो प्रजापति से उत्पन्न हुए - अग्नि , इंद्र , सोम , और परमेष्ठि प्रजापत्य ।

15. वे हज़ार वर्ष के जीवन के साथ पैदा हुए थे: जैसे कोई व्यक्ति दूरी में विपरीत किनारा देख सकता है, वैसे ही उन्होंने अपने जीवन के विपरीत किनारे को देखा।

16. वे स्तुति गाते और परिश्रम करते रहे। तब प्रजापति के पुत्र परमेष्ठि ने उस यज्ञ को, नव और पूर्णिमा के हवन को देखा और वे हवन किए। उन्हें करने के बाद, उसने इच्छा की, 'काश मैं यहाँ सब कुछ होता!' वह जल बन गया, क्योंकि जल ही यहाँ सब कुछ है, क्योंकि वे सबसे दूर के स्थान पर रहते हैं; क्योंकि जो यहाँ पृथ्वी पर खुदाई करता है, उसे वास्तव में जल ही मिलता है; और, वास्तव में, वह उस सबसे दूर के स्थान से, अर्थात् उस आकाश से वर्षा करता है, [3] , इसलिए इसका नाम परमेष्ठि (सबसे दूर, सबसे ऊँचे स्थान पर रहने वाला) पड़ा।

17. परमेष्ठि ने अपने पिता प्रजापति से कहा, 'मैंने एक ऐसा यज्ञ खोजा है जो कामनाओं को पूर्ण करता है: मैं इसे आपके लिए करता हूँ!' - 'ऐसा ही हो!' उन्होंने कहा। तदनुसार उन्होंने उनके लिए वह यज्ञ किया। [यज्ञ] करने के पश्चात् उन्होंने (प्रजापति ने) इच्छा की, 'काश मैं यहाँ सब कुछ होता!' वे प्राण (प्राण वायु) बन गए, क्योंकि यहाँ प्राण ही सब कुछ है: प्रजापति वह प्राण है जो यहाँ बहता है (हवा); और जो कोई जानता है कि वह ऐसा बहता है, वह उसकी (प्रजापति की) दृष्टि है; और जो कोई प्राण से संपन्न है, वह प्रजापति है। और, वास्तव में, जो कोई इस प्रकार प्रजापति की उस दृष्टि को जानता है, वह मानो प्रकट हो जाता है,

18. प्रजापति ने अपने पुत्र इन्द्र से कहा, 'मैं तुम्हारे लिए यह कामना-पूर्ति करने वाला यज्ञ करता हूँ, जो परमेष्ठिन ने अभी-अभी मेरे लिए किया है।'--'ऐसा ही हो!' उसने कहा। तदनुसार उसने उसके लिए यह यज्ञ किया। यज्ञ करने के पश्चात, उसने (इन्द्र ने) इच्छा व्यक्त की, 'काश मैं यहाँ सब कुछ होता!' वह वाणी (वाक्) बन गया, क्योंकि वाणी ही यहाँ सब कुछ है; इसलिए वे कहते हैं, 'इन्द्र वाक् है।'

19. इन्द्र ने अपने भाइयों अग्नि और सोम से कहा, 'मैं तुम्हारे लिए वही कामना-पूर्ति करने वाला यज्ञ करता हूँ, जो हमारे पिता प्रजापति ने अभी-अभी मेरे लिए किया है।'--'ऐसा ही हो!' उन्होंने कहा। तदनुसार इन्द्र ने उनके लिए वह यज्ञ किया। यज्ञ करने के पश्चात, उन दोनों ने इच्छा व्यक्त की, 'काश हम यहाँ सब कुछ होते!' उनमें से एक अन्न खाने वाला बन गया, और दूसरा अन्न बन गया: अग्नि अन्न खाने वाला बन गया, और सोम अन्न; और अन्न खाने वाला और अन्न, वास्तव में यहाँ सब कुछ हैं।

20. तब इन पांचों देवताओं ने वह कामना-पूर्ति करने वाला यज्ञ किया और जिस-जिस कामना के लिए उन्होंने यज्ञ किया, उनकी वह-वह कामना पूरी हुई और जो-जो कामना के लिए वह यज्ञ करता है, उसकी वह-वह कामना पूरी होती है।

21. जब उन्होंने बलिदान किया तो उन्होंने पूर्वी दिशा को देखा और उसे पूर्वी दिशा बना दिया; जैसा कि अब वह पूर्वी दिशा है: इसलिए यहाँ प्राणी आगे की दिशा में चलते हैं,

क्या आपको यह पढ़ना पसंद आया? इस वेबसाइट का समर्थन करने पर विचार करें:

पैट्रियन पर दान करें | लिबरापे | मेरे लिए एक कॉफ़ी खरीदो

(वन टाइम) | क्यों? / अधिक विकल्प... | बंद करना

॥ श्री हरि ॥

॥बृहदारण्यकोपनिषद॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः – पंचमं ब्राह्मणम्

पांचवां ब्राह्मण

बृहदारण्यक उपनिषद 5.5.1

अप एवेदमग्र आसुस्ता आपः सत्यमसृजन्त सत्यं ब्रह्म
ब्रह्म प्रजापतिं प्रजापतिर्देवाꣳस्ते देवाः सत्यमेवोपासते
तदेतत्त्र्यक्षरꣳ सत्यमिति । स इत्येकमक्षरं तीत्येकमक्षरं
यमित्येकमक्षरम् । प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यं मध्यतोऽनृतं
तदेतदनृतमुभयतः सत्येन परिगृहीतꣳ सत्यभूयमेव भवति ।
नैनंविद्वाꣳसमनृतꣳ हिनस्ति ॥ १॥

प्रारंभ में यह व्यक्त जगत् पहले जल ही था। उस जल ने सत्य को प्रकट किया, अतः सत्य ब्रह्म है। ब्रह्म ने प्रजापति (विराट) को और प्रजापति ने देवताओं को उत्पन्न किया। वे देवगण सत्य की ही उपासना करते हैं। वह यह 'सत्य' तीन अक्षरवाला नाम है। 'स' यह एक अक्षर है, 'ती' यह एक अक्षर है और 'यम्' यह एक अक्षर है। इनमें प्रथम और अन्तिम अक्षर सत्य है और मध्य का अनृत अर्थात झूठ है। यह झूठ दोनों ओर से सत्य से परिगृहीत है। इसलिये यह सत्य जैसा ही है। इस प्रकार जाननेवाले को झूठ हिंसा नहीं करता अर्थात उसे नहीं मारता। ॥१॥

पुरुष सूक्त
ऋग्वेद 10.90.13

चन्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षो॒: सूर्यो॑ अजायत। मुखा॒दिन्द्र॑श्च॒ग्निश्च॑ प्रा॒नाद्वा॒युर॑जयत्॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणादवायुरजायत ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्च चक्षोः सूर्यो अजायत | मुखाद इन्द्रश्च चग्निश च प्रणाद वायुर अजायत ||

चन्द्रमा उसके मन से उत्पन्न हुआ, सूर्य उसकी आँख से उत्पन्न हुआ, इन्द्र और अग्नि उसके मुख से उत्पन्न हुए, तथा वायु उसकी साँस से उत्पन्न हुई।"

पुरुष सूक्त
ऋग्वेद 10.90.14

नाभ्या॑ आसीद॒न्तरि॑क्षं शी॒र्षो द्यौः सम॑वर्तत। प॒दभ्यां भू॒मि॒र्दिश॒: श्रोत्र॒तथा॑ लो॒कां अ॑कल्पयन॥
नाभ्य आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकान् अकल्पयन ॥
नाभ्या आसीद अन्तरिक्षं शिरष्णो द्यौः सं आवर्तत | पद्भ्यं भूमिर दिशाः श्रोत्रत तथा लोकम अकल्पयन ||

उसकी नाभि से आकाश उत्पन्न हुआ, उसके सिर से आकाश उत्पन्न हुआ, उसके पैरों से पृथ्वी, उसके कान से अंतरिक्ष के कोने, और इनसे संसार बना

पुरुष सूक्त

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्.
इष्णन्निषाणामुं म ऽ इषाण सर्वलोकं म ऽ इषाण.. (२२)

हे परम पुरुष ! श्री और लक्ष्मी आप की पत्नी हैं. दोनों भुजाएं दिन और रात हैं. नक्षत्र आप के रूप हैं. आप सब की इच्छा पूर्ति की सामर्थ्य रखते हैं. आप सभी लोकों की इच्छा पूर्ति करने की कृपा कीजिए. (२२)

यजुर्वेद 31 वा अध्याय

महा लक्ष्मी च विद्महे विष्णु पत्नी च धीमहि ।
तन् नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् । २,६ २६
ऋग्वेदः खिलसूक्तानि/अध्यायः २